ISSN: 0973-0583

सूरवंशीय शासन की समाज एवं संस्कृति

कुमारी अंजली

शोधार्थी, इतिहास विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

शोध सार

प्राचीन भारत में हिन्दू समाज एवं संस्कृति का वर्चस्व रहा है, लेकिन मध्यकालीन भारत में मुहम्मद गौरी के आक्रमण के बाद जिस नए संस्कृति का जन्म हुआ, वह अपने आप में एक अद्वितीय विशाल कायम किया, जिसकी झलक आज भी समाज में हिन्दू-मुस्लिम मिश्रित प्रणाली के रूप में देखने को मिलती है। 16वी. और 17वी. शताब्दी में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि के कारण भारत में सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला। मुगल वंश की नींव को हिलाकर जिस सूरवंश की जड़ शेरशाह सूरी ने स्थापित किया, वह न केवल राजनीतिक परिदृश्य में बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक पहलुओं में भी अद्वितीय स्थान रखता है। प्रत्येक क्षेत्र की सभ्यता और संस्कृति के आकार देने में समाज द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है। इस उद्देश्य से उस समय समाज में हिन्दू जाति की जटिलता कम होने के बजाय और अधिक थी। इसका उदाहरण है शेरशाह के काल में रोहतास के राजा के यहाँ चुरामन नामक एक मंत्री ब्राह्मण था। उसी प्रकार मुस्लिम समाज में भी ऊँच-नीच, जाति-उप जाति आदि के भेद देखने को मिलते थे। समाज में महिलाओं की स्थिति खराब हो गई थी। पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल-विवाह, बहुविवाह जैसी अन्य प्रथाएँ पूरे समाज में प्रचलित थी। खेल और मनोरंजन में उस समाज के बच्चे जैसे-लट्टू, थासक, झूला या सी सॉ, पतंगबाजी, गुल्ली-डंडा इत्यादि खेलते थे। राजा-महराजाओं द्वारा शिकार खेलने का भी काफी प्रचलन था। इसमें पर्व-त्योहारों से भी समाज सुशोभित थे। सूर अफगान समाज में पोशाक, आहार और सामाजिक सुख-सुविधाओं के मामलें में जीवन स्तर काफी ऊँचा था। इस काल में कहा जाता है कि भाषा एवं साहित्य का भी काफी विकास हुआ। शेरशाह के दरबार में न केवल मुस्लिम कवि थे, बल्कि हिन्दी कवि से जुड़े लोग भी थे। मलिक मुहम्मद जायसी, सूरदास, स्वामी हरिदास इत्यादि का भी जिक्र इसी काल में मिलता है। कला एवं स्थापत्य कला के क्षेत्र में भी सूरवंशीय शासन की प्रशंसा की जाती है। शेरशाह सूरी का मकबरा भारत में पठान वास्तुकला के उत्कृष्ट नमूनों में से एक है। इस प्रकार सूरवंशीय शासन अपने समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

मुख्य शब्द- हिन्दू-मुस्लिम मिश्रित प्रणाली, पर्दा प्रथा, लट्टू, मलिक मुहम्मद जायसी, पठान वास्तुकला आदि।

सूरवंश के समाज की संरचना काफी जटिल थी इसलिए हिन्दू और मुस्लिम समाज की संरचना, उनके बीच भेदभाव, महिलाओं एवं दासों की स्थिति मध्यम एवं कुलीन वर्गों की तानाशाही, समाज में व्याप्त सामाजिक रीति-रिवाजों, जैसे बाल-विवाह, विधवा विवाह इत्यादि पर चर्चा की गई है। जिससे सूरवंश के समाज की समस्याओं को भलीभाँति जाना जा सकता है और किस प्रकार से उन समस्याओं से निबटाया गया था, उसको आज के परिदृश्य में कैसे जोड़ा जा सकता है, उसकी चर्चा भी की गई है। इसके अतिरिक्त सूरवंशीय समाज में मनोरंजन के साधन, कला, वास्तुकला, मूर्त्तिकला, धर्म, दर्शन के विकास में क्या समस्या थी, उनकी भी वर्णन इस आलेख में किया गया है।

सूरवंश के समाज में उपरोक्त समस्याओं को इस आलेख के द्वारा सामने लगाया गया है। ताकि हम सब जान सकें कि मध्यकालीन समाज (1540-1545 ई.) किन-किन भेदभावों, रीति-रिवाजों, संस्कारों, कलाओं से भरा था और जिनकी जानकारी आज के पीढ़ी के लिए आवश्यक है। इस आलेख को पूरा करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोतों को लिया गया है। प्राथमिक स्त्रोत के रूप में कुछ उर्दू एवं फारसी ग्रंथ उपलब्ध हैं। इन ग्रंथों के अंग्रेजी अनुवादित पुस्तकों का संकलन किया गया है। इसके अतिरिक्त द्वितीय स्त्रोत के रूप में आधुनिक इतिहासकारों की कृति बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। इनके द्वारा उजागर किए गए तथ्य भी उपयोगी साबित हुई। इन पुस्तकों में कुछ निम्नलिखित हैं-अब्बास खाँ शेरवानी की पुस्तक तारिख-ए-शेरशाही, अनुवादक ब्रह्मदेव प्रसाद अम्बस्ट है। इस पुस्तक में समाज में वर्ग-विभेद, जातिवाद, प्रथाओं पर चोट की गयी है। दूसरी पुस्तक रजिकुल्लाह मुश्तकी,

वाकयात-ए-मुश्तकी, अनुवादक-इख्तिदार हुसैन शिद्दकी है। इसमें बाल-विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा इत्यादि पर व्यंग्य किया गया है। समाज में फैली बुराइयों एवं असमानताओं से रु-ब-रु करवाया गया है। इसके अतिरिक्त आर.आर. दिवाकर की बिहार थ्रू द एजेज में सूरवंशीय समाज का परिवेश कैसा था, उसमें रहने वालों की वेश-भूषा, मनोरंजन के साधन, अध्यात्म से जुड़े लोगों का व्यक्तित्व, पर्व-त्योहार, कला, विज्ञान इत्यादि पर बल दिया गया है।

इस हेतु अगर वर्णन किया जाए तो समाज में हिन्दू जाति के वर्ण-व्यवस्था में काफी जटिलता थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन सभी के लिए अलग-अलग नियम-कानून थे। लेकिन इस अवधि में निचले स्तर के लोगों की स्थिति खराब थी। उच्च जाति के लोगों की चर्चा काफी जगह मिलती है। उदाहरण के लिए अब्बास खाँ सरवानी के अनुसार शेरशाह के काल में रोहतास के राजा के दरबार में 'चुरामन' नाम मंत्री था जो ब्राह्मण था। [1]

मुस्लिम समाज में भी ऊँच-नीच, जाति-उपजाति आदि के भेद देखने को मिलते थे।[2] हिन्दू जाति में जिस प्रकार ब्राह्मण को उच्च जाति का दर्जा मिला है, ठीक उसी प्रकार सैय्यद को भी मुस्लिम समाज में मिला है। उस समय के मुस्लिम समाज में अफगान जनजाति के बाहर विवाह को नापसंद करते थे जिसके कई उदाहरण मिलते है। इस काल में महिलाओं की स्थिति पहले से और खराब हो गई थी। क्योंकि उस समय में जब भारतीय स्त्रियाँ अपनी प्राचीन गौरवशाली परंपरा खो बैठी तब जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों पर हावी होने लगी।[3] समाज में पर्दा प्रथा, बाल-विवाह, बहुविवाह जैसी अन्य प्रथाएँ प्रचलित थी। पर्दा प्रथा हिन्दू और मुस्लिम दोनों महिलाओं में लोकप्रिय थी। जब महिलाएँ बाहर निकलती तो वह 'बुर्का' पहनती थी। यह मुस्लिम महिलाएँ धारण करती थीं।[4] बहुविवाह मुस्लिम समाज में काफी प्रचलित था।[5] अफगान महिलाएँ साहस के लिए प्रसिद्ध थी। बीबी महतो और अन्य अफगान महिलाएँ पुरुषों की पोशाक पहनकर प्राचीर पर गई और लगातार दुश्मनों के तीरों की बारिश का सामना किया।[6]

मध्य काल में सती प्रथा हिंदुओं में काफी प्रचलित थी। सती प्रथा का आशय है, पति के शव के साथ सती हो जाना।[7] मलिक मुहम्मद जायसी ने पदमावत् में सती होने वाली महिलाओं की प्रशंसा की। उस समय में बाल-विवाह जैसी कुरीतियों से भी समाज अछूता नहीं था। जहाँ लड़कों की शादी आठ या दस साल की उम्र में कर दी जाती थी, वहाँ लड़कियों की शादी पाँच से छः साल की उम्र में कर दी जाती थी। मुस्लिम समाज में इस बुराई से अछूता नहीं था। अंधविश्वास भी समाज में विद्यमान था। महिलाएँ जादू-टोना, ताबिजें आदि का प्रयोग अपनी इच्छाएँ पूर्ति हेतु करती थी।

सूरवंशीय समाज में विभिन्न प्रकार के मनोरंजन के साधन उपलब्ध थे। उनमें मुख्य रूप से लट्टू, जो कि गोल लकड़ी के टुकड़े से बना टॉप (लत्ती) जिसके चारों ओर धागे लपेटे जाते थे, इसे धुरी पर घुमाया जाता था और स्ट्रिंग द्वारा गति में सेट किया जाता था।[8] इसके अतिरिक्त कार्ट-ने, खसक, झूला या सी-साँ, पतंगबाजी, ब्लाइंड-मेन-बफ तथा गुल्ली डंडा इत्यादि खेलों का भी वर्णन इस काल में मिलता है। सूरवंशीय शासन काल में शासक वर्ग जंगली जानवरों के शिकार का भी शौक रखते थे। परमात्मा शरण के अनुसार उस समय घुड़सवारी भी लोकप्रिय था। अफसाना-ए-सहान हमें बताते हैं कि शतरंज अफगानों के पसंदीदा खेलों में से एक था।

पर्व-त्यौहारों की बात की जाए तो प्राचीन काल की तरह इस काल में भी कई धार्मिक, मौसमी एवं क्षेत्रीय त्यौहार होते थे, जिन्हें लोग सामूहिक रूप से मनाते थे। इन त्यौहारों में साल के बारह महीनों में कई तरह के त्यौहार जैसे-राखी बंधन, कृष्ण जन्माष्टमी, दुर्गा पूजा या नवरात्र, लक्ष्मी पूजा या दीपावली, मकर संक्राति, बसन्त पंचमी, महाशिवरात्री, होली, राम नवमी इत्यादि लोकप्रिय थे।[9] ये सब त्योहार हिन्दुओं के द्वारा मनाए जाते थे। मुस्लिम लोग ईद-उल-अजहा, ईद-उल-फितर, रमजान और शब-ए-बारात जैस महत्वपूर्ण त्योहार मनाते थे। इन अवसरों पर ये लोग रंगीन एवं नए वस्त्र धारण करते थे।[10]

वेशभूषा समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक उन्नति का आइना होता है। इस उद्देश्य से उस समय के हिन्दुओं की वेशभूषा में धोती, साड़ी, अंगिया या चोली शामिल थे। अफगान लंबे कोट, टोपियाँ और ढीले बैगी पतलून पहनते थे। सूरवंशीय शासन काल में वस्त्र, भोजन, रहन-सहन इत्यादि का स्तर काफी ऊँचा था।[11] भोजन में उच्च जाति के मुसलमान मसालेदार व्यंजन जैसे मटन सूप, मिरित

चावल, दूध के बने भोज्य पदार्थ, मछली के विभिन्न प्रकार को शामिल करते थे। हिन्दुओं के शाकाहारी भोजन में पूड़ी, सुहाली, गुलगुला, कड़ी, बरीस, बरा, फुलौरी, विभिन्न प्रकार की मिठाईयाँ, विभिन्न प्रकार के फल खाते थे।[12] मुसलमान पान खाने के शौकीन होते थे। 1540 ई. में शेरशाह सूरी ने स्थानीय सरकार का मुख्यालय बिहारशरीफ से पटना स्थानांतरित कर दिए।[13] जिसके कारण पटना का आर्थिक महत्त्व पहले से ज्यादा बढ़ गया।[14] अबुल फजल लिखते हैं, कि बिहार में कृषि उच्च स्तर पर फली-फूली, विशेषकर चावल की खेती। चावल के अतिरिक्त गन्ना, विभिन्न किसमों की दाले, गेहूँ और कपास, पान इत्यादि की खेती देश के अधिकांश हिस्सों में भी की जाती थी। सूरवंशीय काल में बिहार में व्यापार-वाणिज्य, खेत-खलिहान, खनिज संपदा से सम्पन्न था जिसके कारण उद्योग-धंधे काफी विकसित हो रहे थे। बिहार अफीम के लिए प्रसिद्ध था। इस कालखण्ड में शहराह-ए-आजम (ग्रैंड ट्रंक रोड) और कई सरायें बनाए गए, जिससे बिहार के विकास के साथ-साथ यातायात के साधनों एवं सड़कों के विकास के व्यापार-वाणिज्य को काफी बढ़ावा दिया।[15]

मध्यकालीन भारत में भारतीय भाषा और साहित्य की प्रगति का भी प्रमाण मिलता है। उस समय देश का समाज, संस्कृति, धर्म और साहित्य में विभिन प्रकार का नूतन विकास देखने को मिला। इस काल में अरबी और फारसी शिक्षा में उल्लेखनीय प्रगति हुई। न केवल मुस्लिम कवि बल्कि हिन्दी कवि भी दरबार या शेरशाह से जुड़े हुए थे। अरबी और फारसी विद्वानों में मुख्य रूप से मीर सैय्यद रफीउद्दीन, मुल्ला जलाल भीम दानिशमंद, शेख मुबारक इत्यादि शामिल थे। मीर सैय्यद रफीउद्दीन इतने प्रसिद्ध और अद्वितीय परंपरावादी थे कि शेरशाह धर्म और साम्राज्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण मामलों पर उनसे परामर्श करते थे।[16]

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में मलिक मुहम्मद जायसी जिनकी रचना पद्मावत 1540 ई. में पूर्ण हुई थी। 1545 ई. में मीर मंझन ने मधुमालती नामक रचना पूर्ण की। भारत में मध्यकालीन युग की सबसे सशक्त विशेषता भक्ति आंदोलन थी। इस उद्देश्य से सूरदास सूर-अफगान काल के प्रमुख भक्ति कवि थे। आध्यात्मिक गुरु स्वामी हरिदास ने इस क्षेत्र में अपनी रचनाएँ जैसे-हरिदास जी की ग्रंथ, स्वामी हरिदास जी की बानी इत्यादि से उल्लेखनीय योगदान दिया। एक ब्रज कवि नरहरि कई स्थानीय कवियों में से एक थे जिनको इस्लाम शाह सूर (1545-1554 ई.) का संरक्षण प्राप्त था। इस प्रकार सूरवंशीय शासन काल में विशेष रूप से हिन्दी भाषा एवं साहित्य का काफी विकास देखा गया। जायसी और सूर जैसे कवि ने इस काल में जान डाल दी। जिस प्रकार विद्वानों का संरक्षण एवं उनमें दार्शनिक विचारों से ओत-प्रोत हो देश का विकास हो रहा था, यही धारा अकबर के शासनकाल में हुए बौद्धिक पुनर्जागरण की जड़ थी।

काल एवं स्थापत्य की दृष्टि से भी यह काल बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। दिल्ली, ग्वालियर में अनेक महल, मस्जिदें और किले, आगरा, चुनार में निर्मित किलों तथा रोहतास का किला, सासाराम (बिहार) तो सूरवंशीय शासन के वास्तुकला में चार चाँद लगाता है। सासाराम शेरशाह के शानदार मकबरे के लिए विश्वप्रसिद्ध है। यह बिहार में स्थित है। यह एक झील के मध्य एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है। यह अष्टकोणीय, उच्च वास्तुशिल्प और स्थायी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। खास कर बिहार के सासाराम की पहचान सूरवंश के तीन पीढ़ियों के मकबरे से होती है। इस प्रकार सूरवंशीय समाज एवं संस्कृति मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अद्वितीय है। इस काल में समाज एवं संस्कृति काफी फला-फूला।

निष्कर्ष :

मध्यकालीन भारत के 1540-1545 ई. का समाज सूरवंशीय समाज कहलाता है। इस शासनावधि में शेरशाह सूरी एवं उनके वंशजों के कार्यकाल का वर्णन है। इस अवधि में सामाजिक स्थिति प्राचीन काल की अपेक्षा अधिक जटिलता से भरी हुई थी। वर्ण-व्यवस्था में ब्राह्मणों को अधिक इज्जत-सम्मान एवं शूद्र एवं वैश्य के लिए तिरस्कार भी था। मुस्लिम हो या हिन्दू दोनों में ही जाति-उपजाति का वर्णन मिलता है। महिलाओं की स्थिति समाज में निरन्तर गिरती चली जा रही थी। प्राचीन काल में जिन महिलाओं को देवी कहा जाता था, उसी देवी को सूरवंश में पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल-विवाह, बहु-विवाह जैसी कुरीतियों में दबा दिया गया था। अब महिलाएँ पुरुषों के भोग-विलास की वस्तु बनती जा रही थीं।

मध्यकाल में दासों की खरीद-बिक्री तो होती थी,

परन्तु धीरे-धीरे ये कम होने लगा। फिर भी अबुल फजल ने हमें दासों की पंद्रह श्रेणियों के बारे में जानकारी देता है। उनकी स्थिति समाज में दयनीय थी। कहीं कहीं इनका स्थान धीरे-धीरे महिलाओं एवं निचले पायदान के लोगों ने ले लिया।

समाज में लोग अपनी दिनचर्या मनोरंजन के साधन में भी बिताते थे। उनका जीवन विभिन्न प्रकार के खेलों, पर्व-त्योहारों की चकाचौंध, कृषि व्यापार आदि से भी जुड़ा था। हिन्दू-मुस्लिम के त्योहारों में कुछ त्योहार आज भी लोकप्रिय है। इसमें होली, दिवाली, दुर्गा पूजा, ईद, रमजान आदि। व्यापार एवं वाणिज्य के रूप में समाज काफी फला-पुला था। यातायात के साधनों में वृद्धि, ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण, सरायें इत्यादि के विकास ने वाणिज्य को काफी बढ़ाया था।

साहित्य एवं अधात्मक के विकास में भी सूरवंश ने काफी योगदान दिया। इसमें मलिक मुहम्मद जायसी, मीर मंझन, स्वामी हरिदास, कवि नरहरि, सूरदास जैसे कवियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। काल एवं स्थापत्य की दृष्टि से यह समाज काफी महत्वपूर्ण था। सासाराम (बिहार) में शेरशाह एवं सूरी परिवारों के मकबरों के कलात्मक डिजाइन अपने आप में अतुलनीय स्थान रखता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि सूरवंशीय समाज एवं संस्कृति सल्तनत काल की गिरती हुई अवस्था को संभाल कर एक नया जीवन दिया। कुछ क्षेत्रों को छोड़कर हर क्षेत्र में नवीन संचार किया गया ताकि समाज एवं संस्कृति को बढ़ावा मिले।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. शेरवानी, अब्बास खाँ, तारिख-ए-शेरशाही. बी.पी, अम्बस्टा द्वारा अनुवादित, पटना के.पी. जायसवाल रिसर्च इन्टीच्यूट 1974, पृ.-258
2. दिवाकर, आर.आर. बिहार थ्रू द एजेज, पटना के.पी जयसवाल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, 1959, पृ0-531
3. सिंह, सुनील कुमार, शेरशाह एण्ड हीज सकसीजरस, प्प एडीसन, पटना, जानकी प्रकाशन, 2006 पृ. 142
4. पूर्वोक्त, दिवाकर, आर.आर. बिहार थ्रू द एजेज, पृ0-533
5. फजल, अबुल, आइन-ए-अकबरी, एच.एस. जेरेट द्वारा अनुवादित, कलकत्ता, ऐशियटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल- 1984, पृ0-311
6. रशदी, अब्दुर, सोसाइटी एण्ड कल्चर इन मेडाइवल इंडिया, (1206-1556 ई00 कलकत्ता, 1969 पृ0-138
7. मुश्तकी, रजिकुल्लाह, वाकयात-ए-मुश्तकी, इख्तिदार हुसैन शिद्दकी, न्यू दिल्ली, इंडियन कॉउन्सिल ऑफ हिस्टोरिकल, 1993 पृ0-54-55
8. अस्करी, एस.एच. सम एसपेक्ट ऑफ सोशल लाइफ इन बिहार, जे.बी.आर.एस. वाल्यूम स्प्प.स्प्ट 1977.78
9. दिवाकर, आर.आर. बिहार थ्रू द एजेज, पटना के.पी. जयसवाल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, 1959 पृ0-147
10. पूर्वोक्त, मुश्तकी, रजिकुल्लाह वाकयात-ए-मुश्तकी, इख्तिदार हुसैन शिद्दकी। पृ0-34
11. पूर्वोक्त, दिवाकर आर.आर. बिहार थ्रू द एजेज। पृ0-531
12. पूर्वोक्त, दिवाकर आर.आर. बिहार थ्रू द एजेज। पृ0-533
13. अब्दुल्ला तारीख-ए-दाऊदी, एच.एम. इलियट और जॉन डॉउसन द्वारा अनुवादित हिस्ट्री ऑफ इंडिया, एज टोल्ट बाय इटस ओन हीसट्रॉरियन्स, द मुहम्मडन पीरियड, वाल्यू प्ट, दिल्ली लो प्राइस पब्लिकेशन, 1868-77। पृ07477
14. पूर्वोक्त, दिवाकर आर.आर. । पृ0-561
15. पूर्वोक्त, दिवाकर आर.आर. । पृ0-565-66
16. बदायुनी, अब्दुर कादिर मुन्तखान-उत-तवारीख वाल्यूम-1, पृ0-369

❖❖❖